बाप समय पर आकर एक्युरेट पार्ट बजाते
उनका यादगार शिवरात्रि फिर हम हमेशा मनाते
जिनका योग ठीक से नही लगता
उनके पाप रह जाते,पद भी कम हो जाता
योगयुक्त नही तो सद्गति नही होती उनकी
बुद्धि नाम-रूप में फंसी जो रहती
अविनाशी ज्ञान- रत्नों की दुकान खोल सेवा करनी
घर- घर परिचय दे बाप का ,रोशनी लानी
सच्चे बाप के साथ सच्चा रह कुछ नही छिपाना
योग से पाप पूरे भस्म करने
दातापन का भाव संपन्न बना तृप्त रखता
बिन्दु बाप को ही अपना लक्ष्य बनाओ
देखते हुए नही देखों
सुनते हुए नही सुनो
व्यर्थ संकल्प बुद्धि को बनाते कमज़ोर

ॐ शांति !!!
मेरा बाबा!!!